॥ श्रीहरिः ॥

अमोघ शिवकवच

[यह अमोघ शिवकवच परम गोपनीय, अत्यन्त आदरणीय, सब पापोंको दूर करनेवाला, सारे अमंगलोंको, विघ्न-बाधाओंको हरनेवाला, परम पवित्र, जयप्रद और सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाशक माना गया है। यह परम हितकारी है और सब भयोंको दूर करता है। इसके प्रभावसे क्षीणायु, मृत्युके समीप पहुँचा हुआ महान् रोगी मनुष्य भी शीघ्र नीरोगताको प्राप्त करता है और उसकी दीर्घायु हो जाती है। अर्थाभावसे पीड़ित मनुष्यकी सारी दरिद्रता दूर हो जाती है और उसको सुख-वैभवकी प्राप्ति होती है। पापी महापातकसे छूट जाता है और इसका भक्ति-श्रद्धापूर्वक धारण करनेवाला निष्काम पुरुष देहान्तके बाद दुर्लभ मोक्षपदको प्राप्त होता है।

महर्षि ऋषभने इसका उपदेश करके एक संकट-ग्रस्त राजाको दुःखमुक्त किया था। यह कवच श्रीस्कन्दपुराणके ब्रह्मोत्तरखण्डमें है।

पहले विनियोग छोड़कर ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि अंगन्यास करके भगवान् शंकरका ध्यान करे। तदनन्तर कवचका पाठ करे।]

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम्, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे।
श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः, हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
वं कीलकाय नमः, नाभौ।
श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः, गुह्ये।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादि अङ्ग न्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं
निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।

जिनकी दाढ़ें वज्रके समान हैं, जो तीन नेत्र धारण करते हैं, जिनके कण्ठमें हलाहल-पानका नील चिह्न सुशोभित होता है, जो शत्रुभाव रखनेवालोंका दमन करते हैं, जिनके सहस्रों कर (हाथ अथवा किरणें) हैं तथा जो अभक्तोंके लिये अत्यन्त उग्र हैं, उन उमापति शम्भुको मैं प्रणाम करता हूँ।

ऋषभजी कहते हैं—जो सम्पूर्ण पुराणोंमें गोपनीय कहा गया है, समस्त पापोंको हर लेनेवाला

जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं
वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते॥
नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥ १॥
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥ २॥

है, पवित्र, जयदायक तथा सम्पूर्ण विपत्तियोंसे छुटकारा दिलानेवाला है, उस सर्वश्रेष्ठ शिवकवचका मैं तुम्हारे हितके लिये उपदेश करूँगा।

मैं विश्वव्यापी ईश्वर महादेवजीको नमस्कार करके मनुष्योंकी सब प्रकारसे रक्षा करनेवाले इस शिवस्वरूप कवचका वर्णन करता हूँ॥ १॥

पवित्र स्थानमें यथायोग्य आसन बिछाकर बैठे। इन्द्रियोंको अपने वशमें करके प्राणायामपूर्वक अविनाशी भगवान् शिवका चिन्तन करे॥ २॥

हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं
स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं
ध्यायेत् परानन्दमयं महेशम्॥ ३॥
ध्यानावधूताखिलकर्मबन्ध-
श्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।

'परमानन्दमय भगवान् महेश्वर हृदय-कमलके भीतरकी कर्णिकामें विराजमान हैं, उन्होंने अपने तेजसे आकाशमण्डलको व्याप्त कर रखा है। वे इन्द्रियातीत, सूक्ष्म, अनन्त एवं सबके आदिकारण हैं।' इस तरह उनका चिन्तन करे॥ ३॥

इस प्रकार ध्यानके द्वारा समस्त कर्मबन्धनका नाश करके चिदानन्दमय भगवान्

षडक्षरन्याससमाहितात्मा
शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्॥ ४॥
मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा
संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं
धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्॥ ५॥

सदाशिवमें अपने चित्तको चिरकालतक लगाये रहे। फिर षडक्षरन्यासके द्वारा अपने मनको एकाग्र करके मनुष्य निम्नांकित शिवकवचके द्वारा अपनी रक्षा करे॥ ४॥

'सर्वदेवमय महादेवजी गहरे संसार-कूपमें गिरे हुए मुझ असहायकी रक्षा करें। उनका दिव्य नाम जो उनके श्रेष्ठ मन्त्रका मूल है, मेरे हृदयस्थित समस्त पापोंका नाश करे॥ ५॥

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-
ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः
स ईश्वरः पातु भयादशेषात्॥ ६ ॥
यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं
पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः ।

सम्पूर्ण विश्व जिनकी मूर्ति है, जो ज्योतिर्मय आनन्दघनस्वरूप चिदात्मा हैं; वे भगवान् शिव मेरी सर्वत्र रक्षा करें। जो सूक्ष्मसे भी अत्यन्त सूक्ष्म हैं, महान् शक्तिसे सम्पन्न हैं, वे अद्वितीय 'ईश्वर' महादेवजी सम्पूर्ण भयोंसे मेरी रक्षा करें॥ ६॥

जिन्होंने पृथ्वीरूपसे इस विश्वको धारण कर रखा है, वे अष्टमूर्ति 'गिरिश' पृथ्वीसे मेरी रक्षा

योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति
संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥ ७ ॥
कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा
सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्ने-
र्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥ ८ ॥

करें। जो जलरूपसे जीवोंको जीवनदान दे रहे हैं, वे 'शिव' जलसे मेरी रक्षा करें ॥ ७ ॥

जो विशद लीलाविहारी 'शिव' कल्पके अन्तमें समस्त भुवनोंको दग्ध करके (आनन्दसे) नृत्य करते हैं, वे 'कालरुद्र' भगवान् दावानलसे, आँधी-तूफानके भयसे और समस्त तापोंसे मेरी रक्षा करें ॥ ८ ॥

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो
विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः
प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रम् ॥ ९ ॥
कुठारवेदाङ्कुशपाशशूल-
कपालढक्काक्षगुणान् दधानः ।

प्रदीप्त विद्युत् एवं स्वर्णके सदृश जिनकी कान्ति है, विद्या, वर और अभय (मुद्राएँ) तथा कुल्हाड़ी जिनके कर-कमलोंमें सुशोभित हैं, चतुर्मुख त्रिलोचन हैं, वे भगवान् 'तत्पुरुष' पूर्व दिशामें निरन्तर मेरी रक्षा करें ॥ ९ ॥

जिन्होंने अपने हाथोंमें कुल्हाड़ी, वेद, अंकुश, फंदा, त्रिशूल, कपाल, डमरू और रुद्राक्षकी

चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः
पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥ १० ॥
कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो
वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः
सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥ ११ ॥

मालाको धारण कर रखा है तथा जो चतुर्मुख हैं, वे नीलकान्ति त्रिनेत्रधारी भगवान् 'अघोर' दक्षिण दिशामें मेरी रक्षा करें ॥ १० ॥

कुन्द, चन्द्रमा, शंख और स्फटिकके समान जिनकी उज्ज्वल कान्ति है, वेद, रुद्राक्षमाला, वरद और अभय (मुद्राओं)-से जो सुशोभित हैं, वे महाप्रभावशाली चतुरानन एवं त्रिलोचन भगवान् 'सद्योजात' पश्चिम दिशामें मेरी रक्षा करें ॥ ११ ॥

वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः
सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां
पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥ १२ ॥
वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्क-
कपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।

जिनके हाथोंमें वर एवं अभय (मुद्राएँ), रुद्राक्षमाला और टाँकी विराजमान हैं तथा कमलकिंजल्कके सदृश जिनका गौर वर्ण है, वे सुन्दर चार मुखवाले त्रिनेत्रधारी भगवान् 'वामदेव' उत्तर दिशामें मेरी रक्षा करें ॥ १२ ॥

जिनके कर-कमलोंमें वेद, अभय और वर (मुद्राएँ), अंकुश, टाँकी, फंदा, कपाल,

सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा-
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः॥ १३॥
मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलि-
र्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी
नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः॥ १४॥

डमरू, रुद्राक्षमाला और त्रिशूल सुशोभित हैं, जो श्वेत आभासे युक्त हैं, वे परम प्रकाशरूप पंचमुख भगवान् 'ईशान' मेरी ऊपरसे रक्षा करें॥ १३॥

भगवान् 'चन्द्रमौलि' मेरे सिरकी, 'भालनेत्र' मेरे ललाटकी, 'भगनेत्रहारी' मेरे नेत्रोंकी और 'विश्वनाथ' मेरी नासिकाकी सदा रक्षा करें॥ १४॥

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः
कपोलमव्यात् सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो
जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः॥ १५॥
कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।

'श्रुतिगीतकीर्ति' मेरे कानोंकी, 'कपाली' निरन्तर मेरे कपोलोंकी, 'पंचमुख' मुखकी तथा 'वेदजिह्व' जीभकी रक्षा करें॥ १५॥

'नीलकण्ठ' महादेव मेरे गलेकी, 'पिनाकपाणि' मेरे दोनों हाथोंकी,

दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु-
र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥ १६ ॥
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा
मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं
पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे ॥ १७ ॥

'धर्मबाहु' दोनों कंधोंकी तथा 'दक्षयज्ञविध्वंसी' मेरे वक्षःस्थलकी रक्षा करें॥ १६ ॥

'गिरीन्द्रधन्वा' मेरे पेटकी, 'कामदेवके नाशक' मध्यदेशकी, 'गणेशजीके पिता' मेरी नाभिकी तथा 'धूर्जटि' मेरी कटिकी रक्षा करें॥ १७ ॥

ऊरूद्वयं पातु कुबेरमित्रो
जानुद्वयं मे जगदीशवरोऽव्यात्।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्
पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः॥ १८॥
महेश्वरः पातु दिनादियामे
मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः।

'कुबेरमित्र' मेरी दोनों जाँघोंकी, 'जगदीश्वर' दोनों घुटनोंकी, 'पुंगवकेतु' दोनों पिंडलियोंकी और 'सुरवन्द्यचरण' मेरे पैरोंकी सदैव रक्षा करें॥ १८॥

'महेश्वर' दिनके पहले पहरमें मेरी रक्षा करें। 'वामदेव' मध्य पहरमें मेरी रक्षा करें।

त्र्यम्बकः पातु तृतीययामे
वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥ १९ ॥
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां
गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरीपतिः पातु निशावसाने
मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ॥ २० ॥

'त्र्यम्बक' तीसरे पहरमें और 'वृषभध्वज' दिनके अन्तवाले पहरमें मेरी रक्षा करें ॥ १९ ॥

'शशिशेखर' रात्रिके आरम्भमें, 'गंगाधर' अर्धरात्रिमें, 'गौरीपति' रात्रिके अन्तमें और 'मृत्युंजय' सर्वकालमें मेरी रक्षा करें ॥ २० ॥

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां
स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां
सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्॥ २१॥
तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः
पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।

'शंकर' घरके भीतर रहनेपर मेरी रक्षा करें। 'स्थाणु' बाहर रहनेपर मेरी रक्षा करें, 'पशुपति' बीचमें मेरी रक्षा करें और 'सदाशिव' सब ओर मेरी रक्षा करें॥ २१॥

'भुवनैकनाथ' खड़े होनेके समय, 'प्रमथनाथ' चलते समय,

वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं
मामव्ययः पातु शिवः शयानम्॥ २२॥
मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः
शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे
पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः॥ २३॥

'वेदान्तवेद्य' बैठे रहनेके समय और 'अविनाशी शिव' सोते समय मेरी रक्षा करें॥ २२॥

'नीलकण्ठ' रास्तेमें मेरी रक्षा करें। 'त्रिपुरारि' शैलादि दुर्गोंमें और उदारशक्ति 'मृगव्याध' वनवासादि महान् प्रवासोंमें मेरी रक्षा करें॥ २३॥

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवार-
महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥ २४ ॥
पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथ-
सहस्त्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।

जिनका प्रबल क्रोध कल्पोंका अन्त करनेमें अत्यन्त पटु है, जिनके प्रचण्ड अट्टहाससे ब्रह्माण्ड काँप उठता है, वे 'वीरभद्रजी' समुद्रके सदृश भयानक शत्रुसेनाके दुर्निवार महान् भयसे मेरी रक्षा करें॥ २४॥

भगवान् 'मृड' मुझपर आततायीरूपसे आक्रमण करनेवालोंकी हजारों, दस हजारों, लाखों

अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां
छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया ॥ २५ ॥
निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि-
र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य ।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्
संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम् ॥ २६ ॥

और करोड़ों पैदलों, घोड़ों और हाथियोंसे युक्त अति भीषण सैकड़ों अक्षौहिणी सेनाओंका अपनी घोर कुठारधारसे भेदन करें ॥ २५ ॥

भगवान् 'त्रिपुरान्तक'का प्रलयाग्निके समान ज्वालाओंसे युक्त जलता हुआ त्रिशूल मेरे दस्युदलका विनाश कर दे और उनका पिनाक धनुष चीता, सिंह, रीछ, भेड़िया आदि हिंस्र जन्तुओंको संत्रस्त करे ॥ २६ ॥

दुःस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्य-
दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्ति-
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥ २७ ॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे

वे जगदीश्वर मेरे बुरे स्वप्न, बुरे शकुन, बुरी गति, मनकी दुष्ट भावना, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुस्सह अपयश, उत्पात, संताप, विषभय, दुष्ट ग्रहोंकी पीड़ा तथा समस्त रोगोंका नाश करें ॥ २७ ॥

ॐ जिनका वाचक है, सम्पूर्ण तत्त्व जिनके स्वरूप हैं, जो सम्पूर्ण तत्त्वोंमें विचरण करनेवाले, समस्त लोकोंके एकमात्र कर्ता और सम्पूर्ण विश्वके एकमात्र भरण-पोषण करनेवाले हैं, जो अखिल विश्वके एक ही संहारकारी, सब लोकोंके एकमात्र गुरु,

सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय

समस्त संसारके एक ही साक्षी, सम्पूर्ण वेदोंके गूढ़ तत्त्व, सबको वर देनेवाले, समस्त पापों और पीड़ाओंका नाश करनेवाले, सारे संसारको अभय देनेवाले, सब लोकोंके एकमात्र कल्याणकारी, चन्द्रमाका मुकुट धारण करनेवाले, अपने सनातनप्रकाशसे प्रकाशित होनेवाले, निर्गुण, उपमारहित, निराकार, निराभास, निरामय, निष्प्रपंच, निष्कलंक, निर्द्वन्द्व, निस्संग, निर्मल, गतिशून्य, नित्यरूप, नित्य-वैभवसे सम्पन्न, अनुपम ऐश्वर्यसे सुशोभित, आधारशून्य, नित्य-शुद्ध-बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्दघन, अद्वितीय तथा परम शान्त, प्रकाशमय, तेजः-

महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशाङ्कुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभिन्दिपाल-तोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्त्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप

स्वरूप हैं, उन भगवान् सदाशिवको नमस्कार है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःख-दावाग्नि-विदारण, महाभैरव, कालभैरव, कल्पान्तभैरव, कपालमालाधारी! हे खट्वांग, खड्ग, ढाल, फंदा, अंकुश, डमरू, त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मुसल, मुद्गर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी, शतघ्नी और चक्र आदि आयुधोंके द्वारा भयंकर हाथोंवाले! हजार मुख और दंष्ट्रोंसे कराल, विकट अट्टहाससे विशाल ब्रह्माण्ड-मण्डलका विस्तार करनेवाले, नागेन्द्र वासुकिको कुण्डल, हार, कंकण तथा ढालके रूपमें धारण करनेवाले, मृत्युंजय, त्रिनेत्र, त्रिपुरनाशक, भयंकर नेत्रोंवाले, विश्वेश्वर, विश्वरूपमें प्रकट,

वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय

बैलपर सवारी करनेवाले, विषको गलेमें भूषणरूपमें धारण करनेवाले तथा सब ओर मुखवाले शंकर! आपकी जय हो, जय हो! आप मेरी सब ओरसे रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये। प्रज्वलित होइये, प्रज्वलित होइये। मेरे महामृत्यु-भयका तथा अपमृत्युके भयका नाश कीजिये, नाश कीजिये। (बाहरी और भीतरी) रोग-भयको जड़से मिटा दीजिये, जड़से मिटा दीजिये। विष और सर्पके भयको शान्त कीजिये, शान्त कीजिये। चोरभयको मार डालिये, मार डालिये। मेरे (काम-क्रोध-लोभादि भीतरी तथा इन्द्रियोंके और शरीरके द्वारा होनेवाले पापकर्मरूपी बाहरी) शत्रुओंका उच्चाटन कीजिये, उच्चाटन कीजिये; त्रिशूलके द्वारा विदारण कीजिये, विदारण

कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसान् संत्रासय संत्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।

कीजिये; कुठारके द्वारा काट डालिये, काट डालिये; खड्गके द्वारा छेद डालिये, छेद डालिये; खट्वांगके द्वारा नाश कीजिये, नाश कीजिये; मुसलके द्वारा पीस डालिये, पीस डालिये और बाणोंके द्वारा बींध डालिये, बींध डालिये। (आप मेरी हिंसा करनेवाले) राक्षसोंको भय दिखाइये, भय दिखाइये। भूतोंको भगा दीजिये, भगा दीजिये। कूष्माण्ड, वेताल, मारियों और ब्रह्मराक्षसोंको संत्रस्त कीजिये, संत्रस्त कीजिये। मुझको अभय दीजिये, अभय दीजिये। मुझ अत्यन्त डरे हुएको आश्वासन दीजिये, आश्वासन दीजिये। नरक-भयसे मेरा उद्धार कीजिये, उद्धार कीजिये। मुझे जीवन-दान दीजिये, जीवन-दान दीजिये। क्षुधा-तृषाका निवारण करके मुझको आप्यायित कीजिये, आप्यायित कीजिये। आपकी जय हो, जय हो। मुझ दुःखातुरको

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥ २८॥
यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥ २९॥

आनन्दित कीजिये, आनन्दित कीजिये। शिवकवचसे मुझे आच्छादित कीजिये, आच्छादित कीजिये। त्र्यम्बक सदाशिव! आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ऋषभजी कहते हैं—इस प्रकार यह वरदायक शिवकवच मैंने कहा है। यह सम्पूर्ण बाधाओंको शान्त करनेवाला तथा समस्त देहधारियोंके लिये गोपनीय रहस्य है॥ २८॥ जो मनुष्य इस उत्तम शिवकवचको सदा धारण करता है, उसे भगवान् शिवके अनुग्रहसे कभी और कहीं भी भय नहीं होता॥ २९॥

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥ ३०॥
सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते॥ ३१॥
महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः॥ ३२॥

जिसकी आयु क्षीण हो चली है, जो मरणासन्न हो गया है अथवा जिसे महान् रोगोंने मृतक-सा कर दिया है, वह भी इस कवचके प्रभावसे तत्काल सुखी हो जाता और दीर्घायु प्राप्त कर लेता है॥ ३०॥ शिवकवच समस्त दरिद्रताका शमन करनेवाला और सौमंगल्यको बढ़ानेवाला है, जो इसे धारण करता है, वह देवताओंसे भी पूजित होता है॥ ३१॥ इस शिवकवचके प्रभावसे मनुष्य महापातकोंके समूहों और उपपातकोंसे भी छुटकारा पा जाता है तथा शरीरका अन्त होनेपर शिवको पा लेता है॥ ३२॥

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥ ३३॥

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां तृतीये ब्रह्मोत्तरखण्डे अमोघशिवकवचं सम्पूर्णम्।

वत्स! तुम भी मेरे दिये हुए इस उत्तम शिवकवचको श्रद्धापूर्वक धारण करो, इससे तुम शीघ्र और निश्चय ही कल्याणके भागी होओगे॥ ३३॥